वे सिर्फ एक पर्वतारोही नहीं थे...

मोहित शर्मा

तेनजिंग के साथ हिलेरी

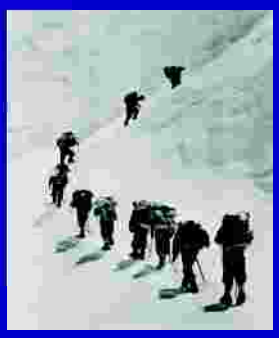

हिम्मत भरे कारनामे कोई भी कर सकता है। कोई आम-सी खूबियों वाला आदमी भी। कुछ ऐसा ही मानना था न्यूज़ीलैंड के उस मधुमक्खी पालक इंसान का जो खुद को "एड" कहलाना पसन्द करता था। जिसे दुनिया आज सर एडमण्ड हिलेरी के नाम से जानती है। जो पृथ्वी की सबसे ऊँची जगह माउण्ट एवरेस्ट पर अपने साथी तेनजिंग नॉरगे के साथ सबसे पहले पहुँचा।

हिलेरी खोजी तबियत के इंसान थे। इसीलिए उनकी नज़रों ने माउण्ट एवरेस्ट के साथ-साथ उसके आस-पास रहने वालों की गरीबी, बीमारी और अशिक्षा को भी ढूँढ़ लिया। नेपाली शेरपा तंगहाली में थे। न तो उन्हें बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध थीं, न ही शिक्षा के अवसर। हिलेरी ताउम्र इन समस्याओं से उबरने में नेपाली शेरपाओं की मदद करते रहे।

सर हिलेरी से पहले पहाड़ों पर चढ़ना अमीरों का शगल माना जाता था जिसमें मदद करने वाले शेरपाओं की हैसियत एक अदने नौकर से ज़्यादा नहीं समझी जाती थी। एक साधारण परिवार से ताल्लुक रखने वाले हिलेरी न सिर्फ खुद एवरेस्ट की चोटी पर चढ़े बल्कि उनके साथ तेनजिंग नाम का शेरपा भी था जिसे उन्होंने उस अभियान में बराबरी का दर्ज़ा दिया और दिलाया भी।

पर्वतारोहियों के दल का कोई सदस्य जब खराब मौसम या किसी अन्य दुर्घटना में घायल हो जाता तो उसे छोड़कर शेष दल आगे बढ़ जाता था। हिलेरी ने इस प्रवृत्ति की खिलाफत की। उन्होंने कहा कि एवरेस्ट पर चढ़ते वक्त किसी भी मोड़ पर अगर उन्हें कोई मुसीबत में फँसा इन्सान मिला होता तो वे उसकी जान बचाने के लिए अपना अभियान स्थगित कर देते। हिलेरी की इस बात से कई पर्वतारोही बहुत प्रभावित हुए जिसके चलते पहाड़ों पर चढ़ने वाले कई लोगों की जानें बचाई जा सकीं।

अब जबकि हिलेरी हमारे बीच नहीं हैं तब यह फैसला करना बहुत मुश्किल नहीं है कि हम किस तरह उन्हें याद करें – एक महान पर्वतारोही के तौर पर जिसने दुनिया की सबसे ऊँची चोटी पर अपना परचम फहराया या फिर एक साधारण और संवेदना से भरे एक इंसान के रूप में जिसने अपनी सादगी, निश्छलता और सेवाभावना से आम आदमी का दिल जीत लिया।

एडमण्ड हिलेरी व तेनजिंग नॉरगे के एवरेस्ट पर चढ़ने से लेकर अब तक हिमालय का नज़ारा काफी बदल चुका है। अब हिमालय उतना सफेद नहीं रहा है। वहाँ जगह-जगह पर्वतारोहियों द्वारा इस्तेमाल की गई चीज़ें बिखरी पड़ी दिखाई देती हैं। इस सामान में ऑक्सीजन के सिलण्डर, खाने के डिब्बे, खाली बोतलें और रस्सियाँ आदि शामिल हैं। यहाँ के ग्लेशियरों से एशिया की कई बड़ी नदियाँ निकलती हैं इसलिए भी कचरे का बढ़ना खतरनाक साबित हो सकता है। एडमण्ड हिलेरी जैसे लोगों की सोच जहाँ खोज परक थी वहीं अब ज़्यादातर पर्वतारोहियों की सोच उपलब्धिपरक है। कभी हिमालय पर्वतारोहियों को मुश्किल में डाला करता था आज पर्वतारोहियों की वजह से हिमालय मुश्किल में है।